

संज्ञा

संज्ञा

संज्ञा

संज्ञा

संज्ञा

2417

ASIA ARCHIVES



कं गी॥  
॥१॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पांडव गीता भाषा लिख्यते ॥ पांडव उवाच ॥ प  
द्वय कहते हैं ॥ प्रह्लाद भयात्तरुदृषि भयापराशरुदृषि भयापुंडरीकच  
षित्वाश्रुक्षिप्रं वरुक्षि राजाश्रुक्षि शोतकचुषि भीष्मपिता  
पांडव उवाच ॥ प्रह्लाद नारद पराशर पुंडरीकत्वाणावरीषश्रुकशो  
नकभीष्मकाद्या ॥ रुक्मांगदार्जुन वशिष्ठ विभीषण द्याएता  
नदं परमभागवतां नमामि ॥ ॥१॥ ॥

महत्कलांग ॥ जाश्रुनवशिष्टरुषि विभीषण राक्षस एव समनारायण  
केवदेभक्त है ॥ इन्कोमैप्रणमकर्ता हूं ॥ लोमहर्षण कहता है ॥ पुषिष्टिर

राजा के नाम ले लें सै धर्म रहि होती है ॥ भीमसेन के नाम ले लें सै पाप कानाश  
ता है ॥ अश्रुन के नाम ले लें सै शत्रु कानाश होता है ॥ माद्री के पुत्र नंदकुल  
सहदेव इनके नाम ले लें सै रोग नहि होता है ॥ २ ॥ ब्रह्मा कहता है ॥ ये मनुष्य

लोमहर्षण उवाच ॥ प्रथमो विकर्षति पुषिष्टिर कीर्तनेन पापं प्रणश्यति  
हृकोदर कीर्तनेन शत्रुर्विनश्यति धनं जय कीर्तनेन माद्री कृतौ कथयः  
तां न भवन्ति रोगा ॥ २ ॥ ब्रह्मा उवाच ॥ ये मानका विगत राग परापरता ना

विगत रागे माया मोह जिन्को नहि है ॥ ईश्वर का भजन करते हैं ॥ देवता के देवता  
सै न राग है ॥ उन्का स्मरण करते हैं ॥ २ ॥ ये मनुष्य नारायण का ध्यान करते



पांसी ॥  
२३

उस ध्यान में अंत करण के पाप दूर करके मा  
तै है ॥ ३ ॥ इंद्र कहते हैं ॥ नारायण का नाम ॥ नुष्य के पाप चोर नैक ला है ॥ ४ ॥

रायणं सुरगुरुं सततं स्मरंति ॥ ध्यानेन ते न हनति लिख्य चेत्तत्ता  
सो मातुः पयोधरसंनपुनः पिवंति ॥ ३ ॥ नारायणो नाम नरो नरा  
यणो प्रसीद्वोरः कथितः पृथिव्यां ॥ अनेक जन्मा जित पाप संच  
यं हरत्यशेषं मृतमावृण्व ॥ ४ ॥

या त पृथ्वी मे स व ज्ञा एते हैं ॥ नारायण का नाम कैसा है ॥ अनेक जन्म के पाप

अर्जुन कहते हैं ॥ यो नारायण अचिंत है ॥ देखें में नहि आवाता है ॥ अनंत अक्षय है ॥  
इसका नाश नहि है ॥ सर्व व्याप्त है ॥ सब का ठाकुर है ॥ यि सनेयो संसार का प्रकाशक  
करता है ॥ तिन लोक का विस्तार विचार कर्ने वाला हरि यि सहूं सकते हैं ॥

अर्जुन उवाच ॥ अचिंत स व्याक्रमंतं स व्याय विभुं प्रभुं भावित विष्वभान  
न ॥ त्रैलोक्य विस्तार विचार करिकें हरि प्रपन्नो मि गतिं महात्मना  
॥ ७ ॥

वडे का गति साध संतन का कर्ने वाला उस के मेशरण इतुं ॥ ७ ॥ श्री राम



॥ १५ ॥

नरकुल कहते हैं ॥ काल के पास सी सेवधाः जब पाताल कुं जाणा होवे य  
कही न कुल मे जाणा होवे ॥ यव पप्र पंती की डे सो बडो यो नि सो सो दी जो

नरकुल उवाच ॥ यदि गमन मधस्ता काल पाशा नुबंधा यद्विच-  
कुल विहीने जायते पक्षि कीटे ॥ कमी प्राप्त मपि गत्वा धायते चो-  
नरात्मा मम भवतु हृदि स्थित केशव भक्ति करे का ॥ ८ ॥

मे जन्म होवे ॥ तो भी मेरे हृदय में ईश्वर का ध्यान रहे ॥ ईश्वर की भक्ति हृद-  
य में होवे ॥ केशव के विषे ध्यान रहे ॥ ९ ॥ श्री भगवाना नमः ॥ श्री ॥

सहदेव कहते हैं ॥ यत्त रूप यो वाराह जी है ॥ वराजिन का ध्यान है ॥ वि-  
ष्णु के अवतार तिन कों ॥ यो मनुष्य प्रणम करते हैं ॥ तिन मनुष्य न्को न

सहदेव उवाच ॥ तस्य यत्त वाराहस्य विष्णोः ॥ रत्नलतेजसः ॥ प्र-  
णमं ये प्रकुर्वीत ते सामपि नमो नमः ॥ ९ ॥ कुंतु ता च ॥ स्वकर्म-  
फल निर्वृत्तिं यां यां यो निव्रजाम्यहं ॥ तस्यो तस्यो हवि केशः  
त्वयि भक्ति दृढासु मे ॥ १० ॥ श्री राम

नमस्कार है ॥ ९ ॥ कुंती जी कहती है ॥ अपने करे को कर्म है ॥ उन के फल मा-  
सुजि सजाति मे जाउंगी ॥ तिस जाति मे ॥ हे कृष्ण तेरे विसय मेरी दृढ भक्ति



श्री ॥  
॥ ५ ॥

मादीजी कहती है ॥ कृष्ण के विषैं जिनकी प्राति है ॥ कृष्णजी का स्मरण  
जे मनुष्य करते है ॥ रात्रि में कृष्ण का भजन ये करते है ॥ प्रातः काल

मादि उवाच ॥ कृष्णरा कृष्णमनुस्मरंति रात्रौ च कृष्णं पुनरुत्थि  
ताये ॥ तेभिन्न देहा प्रविशंति कृष्णं हविष्या मंत्रदुतं दुतासे  
॥ ११ ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥

के कृष्ण का ध्यान ये करते है ॥ ते मनुष्य देह कों छोड़ि के ॥ कृष्ण के शरीर में  
पैठि जाते है ॥ जे सा ब्रह्म एते मंत्र पठि के होम करा तो चरु अग्नि के निषेपे

शेषदीजी कहती है ॥ देह कृष्ण की देह के विषैं पक्षि न के विषैं मृग न के विषैं सर्प  
न के विषैं ॥ और राक्षस के घर में पिशाच यो नि के विषैं ॥ मनुष्य न के घर में

शेष उवाच ॥ कीड़े सुपक्षि मृगे सुशरीर सुपे सुरक्षः पिशाच मनु  
येष्वपि यत्र तत्र ॥ जातस्य मे भवतु के जात त्वत्प्रसादा त्वयो व  
भक्तिरचला वा भिचारिणी च ॥ १२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

जाहां मेरा जन्म होवे ॥ तहां तहां तेरे प्रसाद कर्के तेरे विषैं मेरी अलह  
ठ भक्ति होवे ॥ यह वीती मेरी है ॥ १२ ॥ श्री ॥ श्री ॥ ॐ



ॐ गी ॥ सुभद्राजी कहती है ॥ श्री कृष्ण कौं यो यो कवेर प्रणाम करै तो ॥ दश ॥  
८ ॥ मेधयज्ञ करे का फल पावे ॥ दश ॥ अश्वमेधयज्ञ करने वाला तो फेर पृथ्वी में

सुभद्रावाच ॥ एकोपि कृष्ण स्मृतः प्रणमो दशाश्वमेधी वभू ॥  
येन तुल्यः ॥ दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्ण प्रणमि नर्भ ॥

आइकै जन्मधारता है ॥ कृष्ण को प्रणाम नमस्कार करने वाला फेर जन्म न  
हि पावता है ॥ मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ यद्वात विष्णु यह है ॥ १३ ॥

॥ राम ॥  
॥ ८ ॥

अभिमन्यु कहते है ॥ हे गोविंद ॥ हे गोविंद हे हरि हे मुरारे ॥ मुरार नामा दैत्य कामार्ने  
वाले ॥ हे गोविंद हे गोविंद गङ्गवन के चुगावन वाले मुकुंद कृष्ण ॥ कर्क जिसके ना

अभिमन्युवाच ॥ गोविंद गोविंद हरि मुरारे ॥ गोविंद गोविंद मुकुंद  
कृष्णः ॥ गोविंद गोविंद रथांग पाणे गोविंद गोविंद नमामि त्वभ्य ॥ १४ ॥

महे ॥ ऐसे गोविंद नारायण सुदर्शन चक्र के धारने वाले ऐसे जो गोविंद तु  
महे ॥ तुमको मैं नमस्कार करता हूँ ॥ तुम दया सागर हो ॥ १४ ॥



कृ२

गंगी ॥  
॥ ७ ॥

धृष्टद्युम्न कहते है ॥ हे लक्ष्मी के पति हे नारायण वासुदेव वसुदेव के पुत्र हे  
विंद हे वैकुण्ठ के वासी ॥ हे मुकुंद ॥ हे ह्रीं ॥ श्री के शिव आनंद मूर्ति हे नृ सिंह ॥ हे

धृष्टद्युम्न उवाच ॥ श्री राम नारायण वासुदेव गोविंद वैकुण्ठ फकुं  
द कृष्ण ॥ श्री के शिवानंत नृ सिंह विष्णो नात्रा हि संसार भु  
जंग दंष्ट्र ॥ १५ ॥ श्री

विष्णो ॥ संसार ही मयो भुजंग सर्प है ॥ उस नैड सा जो मे हे मे गोरक्षा करो मै त्र  
मारे चरण के शरण पडाऊं ॥ १६ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥ ॥

राम ॥  
॥ ७ ॥

सात्यकिया दव कहते है ॥ हे नासयण तुम कैसे हो ॥ अनंत तुम सब लहे ॥ हे हेरे हे वि  
ष्णो हे कृष्ण ॥ हे दामोदर ॥ हे अच्युत ॥ हे गोविंद ॥ हे अनंत ॥ हे जगत के पति ॥  
वसुदेव के पुत्र ॥ तुम को नमस्कार है ॥ १६ ॥ उधव कहता है ॥ वासुदेव यो नायण है

सात्यक्य उवाच ॥ अप्रमेय हेरे विष्णो कृष्ण दामोदर अच्युत ॥ गोविंदानंत श  
र्वेश वासुदेवन मोक्षुते ॥ १६ ॥ उधव उवाच ॥ वासुदेवं परित्यज्य यो न्यदे  
वमुपासते ॥ नृषितो जाह्नवी तीरे कृपं त्वनति दुर्मतिः ॥ १७ ॥

उत्तों छोड़ी के जोर देवतान का उपासना सजा करता है ॥ प्यास लगी है ॥ गंगा जल  
छोड़ी के कूवे के जल रूपि उता है ॥ जल पिउ ए निमित्त कृपा घनता है ॥ १७ ॥







पां गी १

होणा चार्घ्य कहते है ॥ ये ये देवदानव राक्षस चक्र परयो नारायण तीन लोक  
के ना जनाई न जिस के पास कर है ॥ उसने सड़ाई में जिन को मारा है सोस

होणा चार्घ्य उवाच ॥ ये ये हत नाश कधरे ए देवा त्रै  
लोक नाथे न जनाई नेन ते गता विष्णु पुरी प्रया  
ना क्रोधो पि देव स्वर एण तुल्यः ॥ २२ ॥

यवै कुंठ लोक कौ गये ॥ नारायण का क्रोध भिः वरे एण तुल्य ॥ प्रसाद के वरो  
वर हो जाता है ॥ ऐसे दया सागर नारायण है ॥ सब को तारते है ॥ श्री रामायण ॥ १०

कर्ण कहते है ॥ हेल दिस ॥ मेहू सरी वात नहि जाणता ॥ मेक चु प्रणता भि  
नहि ॥ मे और की सी का ध्यान भी नहि करता ॥ मे कि सिका स्मरण भी नहीं क  
कर्ण उवाच ॥ नानं वदामि न शृणोमि न चिंतयामि नानं  
स्मरामि न जामि न चाप्रयामि ॥ भक्त्या त्वदीय चरणं वुज  
मादरेण श्री श्री निवास पुत्रुषोत्तम देहि दासं ॥ २५ ॥

रता ॥ मे कि सिका भजन भी नहि करता ॥ मे कि सिका आश्रय भी नहीं करता  
हे प्रसन्नोत्तम ॥ श्रुणो चरण विद कि भक्ति सेवा मुज को द्यो ॥ २५ ॥ श्री रामः



प्र० ॥ १२ ॥ धृतराष्ट्र कहते हैं ॥ अपने ये भक्त देवता उनके कारण वामन का हूँ जिसने शांति है ॥  
नारायण जिसके पास कहते हैं ॥ अनेक वपराक्रम जिसको कहते हैं ॥ ऐसे तुम

धृतराष्ट्र उवाच ॥ नमो नमः कारण वामनाय नारायणायामि  
तविक्रमाय ॥ श्रीगार्ग्य चक्राभिगदाधराय नमस्तु तस्मै परमेश्वर ॥

कौन मस्कार है ॥ धनुष भयासुदर्शन चक्र तरवार दाइन हतारन के धारनै वाले  
पुरुषोत्तम जिससे कहते हैं ॥ ऐसे तुम कौन मस्कार है ॥ २६ ॥ ॥ ॥

गंधारी कहते हैं ॥ हे देवन के देव ॥ हे नारायण ॥ तुम मेरे माता मेरे पिता भित्तु  
मी हो ॥ मेरे भाई और दोस्त भित्तु मी हो ॥ दो मेरे विधे ॥ विद्या है ॥ सो भित्तु मी हो ॥ दो

गंधार्य उवाच ॥ त्वमेव माता पिता त्वमेव त्वमेव बंधु प्रसखा  
त्वमेव ॥ त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ २७ ॥

मेरे घर मैं धन दौलत है ॥ और मेरा घोड़ा है ॥ सो सब भित्तु मी हो ॥ मेरे चरण कान  
काद सड़ें मेरे उपर दया कृपा करियो ॥ २८ ॥ ॥ श्रीरामः ॥ ॥ ॥



॥ १०१ ॥ दुपद उवाच ॥ वृषदाजा कहते हैं ॥ जज्ञ के पति हैं ॥ हे अच्युत ॥ हे गोविंद ॥ हे माधव ॥ हे अनंत ॥ हे केशव ॥ हे कृष्ण ॥ हे विष्णो ॥ हे हृषीकेश ॥ हे वासुदेव ॥ तुम कौन नमस्कार है ॥ २८ ॥

दुपदोवाच ॥ यत्तु अच्युत गोविंद माधवानंत केशव ॥ कृष्ण  
विष्णो हृषीकेश वासुदेव नमोस्तुते ॥ २८ ॥ जयदुपदोवाच ॥ नमः  
कृष्णाय देवाय ब्रह्मणे नंत भूर्जये ॥ योगेश्वराय योगाय त्वाम

जयदुपदाजा कहते हैं ॥ हे कृष्ण ॥ तुम कौन नमस्कार है ॥ हे देव ॥ हे ब्रह्म ॥ हे सत्य ॥ हे अनंत ॥ हे भूर्ज ॥ हे योगेश्वर ॥ न के योगेश्वर ॥ मेरे शरण ॥ दुपदोवाच ॥ २९ ॥

राम  
१३

विकर्णराजा कहते हैं ॥ वासुदेव के पुत्र कृष्णजी कौन नमस्कार है ॥ देवकी के नंदन ॥  
कृष्ण है ॥ उन कौन नमस्कार है ॥ नंदगोप के कुपुत्र गोविंदजी कौन नमस्कार है ॥ ३० ॥

विकर्णोवाच ॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नंदनाय च नंदगो  
पकृष्णाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ३० ॥ सोमदत्त उवाच ॥ नमः पर  
मकल्याण नमस्ति विष्णुभावन ॥ वासुदेवाय शांताय यदृच्छां प

सोमदत्तराजा कहते हैं ॥ परम कल्याण मंगल सृष्टि संसार के प्रकाश करने वाले शोना  
रायण ॥ उन कौन नमस्कार है ॥ वासुदेव के पुत्र शान्ति जिन कि सृष्टि या देवन के पति हैं

मे कृष्णजी कौन नमस्कार है ॥ ३१ ॥



पां जी ॥  
१६

विराट उवाच ॥ विराट राजा कहता है ॥ ब्रह्म ए है देवता जिसके गो ब्रह्म ए न का हि  
कर्ने वाला ऐसे कृष्ण जी को नमस्कार है ॥ जगत के कल्याण कर्ने वाले ऐसे  
विराट उवाच ॥ नमो ब्रह्म ए देवाय गो ब्रह्म ए हिताय च ॥ ज  
गदिताय कृष्णाय गो विदाय नमो नमः ॥ ३२ ॥ शल्प उवाच  
अतस्ती पुष्प संकाश पीत वासस मुच्यते ॥ येन ह्यंति गो  
विंदं ननेषां विंदते भयं ॥ ३३ ॥

नारायण गोविंद जी है ॥ उनको नमस्कार है ॥ ब्रह्म ए राजा कहता है ॥ नमो सी  
का फूल ॥ उसके समान जिसकी प्रणाम मू ॥ पीत वस्त्र पहिने ॥ मुच्यते जो  
गोविंद उन्को जो प्रणाम करते है ॥ उन्को कि विदाय नमः नहि ॥ ३३ ॥ शल्प

करके जायन

राम

१६

बलभद्र कहते है ॥ हे कृष्ण हे कृष्ण हे दयावंत ॥ जिन कि गति को हि नहि उन कि  
गति तुम हो ॥ संसार ही जो समुद्र उसमें डूबते सो प्राणि उन के विषे प्रसाद करे  
बलभद्र उवाच ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण लो ॥ त्वमगतीनां गतिर्भव सं ॥  
संसारानवमशानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ३४ ॥ श्री कृष्ण उवाच  
कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरंति चित्पशः ॥ जलपीत्वा यथा  
पयं नरकादुद्धराम्यहं ॥ ३५ ॥

हे पुरुषोत्तम उन कों उतारो ॥ ३४ ॥ श्री कृष्ण कहते है ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण करिके जो  
मेरा स्मरण करते है ॥ जल को पीने के जैसा कल उपर कों चला आवता है ॥ तैसा  
हि नरक से उन्का उद्धार करेगा ॥ नरक से मै छुटावता ॥ ३५ ॥ श्री राम



पं गी ॥  
१५ ॥

फेरलुक्क कहते है ॥ हेमनुसो ॥ मैसत्य कहता इंस शसत करके ॥ गो मेरनाम मुकुंद  
नरसिंह ॥ जनाईन कहता ॥ ॥ जीवता नित्य भजता है ॥ एके विषे और माण कूट

सत्पं वी भिमनुजा स्वयमूर्द्धवा इर्यो मां मुकुंद नरसिंह जना  
ईनेति ॥ जीवन्न पन्ना नुदिनं मरलेरणे वा पाषाण का सुसद  
शा यदशम्य भिरुम् ॥ ३६ ॥

नेव <sup>य</sup> तमेरा स्मरणो करता है ॥ पषाण का सु और सर्वत्र वा प्रमै मेरा भजम कर  
ता है ॥ उन किमन की इत्ता मेरा कर ता है ॥ ३६ ॥ खन से छुटा देता है ॥ ३६ ॥

राम  
१५

इश्वर कहते है ॥ यामनुस्य एक वेरना रायण का नाम लेता है ॥ सोमनुस्य तीन सो  
कल्याण की त सर्व गंगा दितीर्थ न मे स्नान करे का फल पावता है ॥ हे पुत्र ॥ ३७ ॥ सत्पं  
राणि कहता है ॥ अहे जहो श्री नागयण की कथा होती है ॥ वहां गंगा जमुना गोदा

इश्वर उवाच ॥ सकृन्ना रायणोत्पत्त्या पुमान्कल्प शतत्रयं ॥ गंगादि सर्व  
तीर्थेषु स्नानो भवति पुत्रकः ॥ ३७ ॥ सत्पं उवाच ॥ तत्रैव गंगा यमुना  
चनेत्र गोदा वरीवरी सिंधु सरस्वती च ॥ सर्वाणि तीर्थानि वसंतितः ॥  
यत्राच्युतो दारकाया प्रसंगाः ॥ ३८ ॥

वरीसमुद्र सरस्वती ॥ और संरणी तीर्थ कथा सुणने को आवते है निश्चय करके

३८ श्रीराम



पं. गी. ॥  
१६॥

यमहतेहे नरकके विषे पापनका भोग करने गोप्राणि है। उल्केपास चित्र  
ग्रामते कहाः अही दुःखनके दूर करने वाले ॥ यो नारायण है। उल्की प्रजात  
यमउवाच। नरके पवमानंत यमेन परिभाषितं। कित्तव्याना  
चितो देवः केशवः केशनाशनः ॥ ३९ ॥ नारद उवाच। यन्मां  
तरसहस्रेषु तपो ध्यान समाधिना ॥ नाराणां दीर्घाणां पापानां कृ  
ह्ये भक्ति प्रजायते ॥ ४० ॥

मने कं नहि करी ॥ ३९ ॥ नारद कहते है ॥ हजार जन्म के विषे जवत पस्या ध्या  
न योग करे तब मनुष्यन के पाप हर होवे तब कृष्ण विषे भक्ति होवे ॥ ४० ॥ श्री राम ॥

१६॥

भरद्वाज कहते है ॥ जिन के हृदय में लक्ष्मी पति यो नारायण रहते है ॥ स्वाम जिन की  
मूर्ति है ॥ उनके सदा लाभ है ॥ सदा उनके जय है ॥ हर्क है से हो गी ॥ ४१ ॥ गौतम नृषिक ह  
ते है ॥ ग्रहण के विषे काशी में जाय के कोटि गो उन का दान करती है ॥ प्रयाग विषे गंगा

भरद्वाज उवाच ॥ लाभ स्तेषां जय स्तेषां कुत स्तेषां पराजयः ॥ येषां  
मिंदी वरणा मोह दय स्थो जनाई न ॥ ४५ ॥ गौतम उवाच ॥ गो के रि  
दाने ग्रहण सुकाशी प्रयाग गंगोदक लववासी ॥ यथायुतं मेरु सु  
वर्ण दानं गोविंदनाम स्मरणेन तुल्यं ॥ ४६ ॥

जरलुपी के कल्प पर्यंत जो वास करता है दश हजार जन्म न करे जो करता है ॥ सुवर्ण वरोवर का दान  
जा है ॥ सो सब एक गोविंद के नाम के समान है ॥ ४६ ॥



गोपी ॥  
१८ ॥

मृगिकहता है ॥ गोविंदका योनाम है ॥ सोही स्त्रान है ॥ गोविंदका योनाम है ॥ सोही  
यहै गोविंदका योनाम है ॥ सोही ध्यान है ॥ सदा गोविंदकी रत्न कर्नी ॥ ४७ ॥ त्रिरत्न

असिरुवाच ॥ गोविंदे तिसदा स्त्रानं गोविंदे तिसदा जपः ॥ गोविं  
दे तिसदा ध्यानं सदा गोविंदकी रत्नं ॥ ४७ ॥ त्रियक्षरं परं ब्रह्म गो  
विंदे तिसदा त्रयक्षरं ॥ तस्माद्ब्रह्म रितं येन ब्रह्म भूयाय कल्पते ॥ ४८ ॥

जो कहै ॥ सो गोविंद नाम है ॥ यो मनुष्य गोविंदके त्रियक्षर नम्रं जपना है ॥ सो ब्रह्म से  
जायके मिलता है ॥ मुक्त हो जाता है ॥ निश्चय करिके ॥ ४८ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ ४८ ॥

वादरायण कहते है ॥ अच्युत यो नारायण का नाम है ॥ सो कल्पवृक्ष है ॥ अनंत यो नाराय  
ण का नाम है ॥ सो कामधेनु है ॥ गोविंद यो नारायण का नाम है ॥ सो चिंतामणि है ॥

वादरायण उवाच ॥ अच्युतः कक्षवृक्षोऽसौ अनंत कामधेनुव ॥ चिं  
तामणिश्च गोविंदो हरिर्नाम विचिंतयेत् ॥ ४९ ॥

तस्मात् हरि यो नारायण है ॥ सो वडे है ॥ उनका भजन स्मरण कर्नी ॥ ४९ ॥



कं गी ॥  
१९ ॥

हरिकहते है ॥ देव कि के नंद नयो कृष्ण सो सर्व कल्याण न करे ॥ यादव कुल के  
दीपक यो कृष्ण सो जय मंगल को करे ॥ मेघ यण मजिस की मूर्ति है ॥ ऐसे जो

हरि उवाच ॥ जयति जयति देवो देव की नंद नो यं जयति जयति कृ  
ष्णो वृष्टि वंश मदीपः ॥ जयति जयति मेघ यण मलः कोमलां  
गो जयति जयति पृथ्वी भासा शो मुकुंदः ॥ ५० ॥

कृष्ण है सो तुमारे अनंद को करे ॥ पृथ्वी के भू भार हर करे नैवाले यो कृष्ण है सो तुमा

५० ॥

सर्व मंगल करे ॥

५० ॥

संजय कहते है ॥ ये मनुष्य दुःखी है ॥ दुर्बल है ॥ जिन्के हात पाउ नहि चलते है ॥  
ये वृद्ध तडरते है ॥ सिंह वाग्र वाह चोर ईन्के मध्य मे पडे है ॥ ऐसे जो प्राणी नारा

संजय उवाच ॥ आर्त्ती विष समा शिथिला श्रमी ता घोर सुखा घृदिषु व  
र्त्तमाना ॥ संकीर्त्तनारायण शब्द मात्र विमुक्त दुःख सुखि नो

य एण के नाम ही जो चार अक्षर मुख से कहते है ॥ नारायण के नाम से लीए  
मात्र दुःख से कुटि जाते है ॥ नारायण के नाम से पाप हर करे नैवाला और को

मूर्ति ॥ ५१ ॥

दिन है ॥ ५१ ॥



॥ गी ॥  
॥ १ ॥

अकुर कहते है ॥ मै कै साहुं नारायण के यो मै दाश हुं ॥ उन के ये दास है ॥ उ  
न का मै दास हुं ॥ नारायण के ये भक्त है ॥ उन का मै दाश सेवक हुं ॥ और ये सं

अकुर उवाच ॥ अहमभि नारायण दास दास दास दास  
सदा दास दास ॥ अने भई जो जगतो नाराणा तस्मादहं  
न्यतरोहमस्मि लोके ॥ २० ॥

॥ राम ॥  
॥ २ ॥

सार मै मनुष्य है ॥ उनके ये राजा है ॥ उन सैं भी मै वडा हुं ॥ मेरा वडा भाग है  
जो नारायण की कृपा सैं मो कें ॥ ऐसी भक्ति हृदय में भई है ॥ मे अति धन्य हुं ॥ २० ॥

३१

विर कहते है ॥ हरिकानाम वदा है ॥ नारायण का नाम मेरा प्राण है ॥ कलियुग के विषे ॥ ना  
रायण के नाम सैं दो सरीगति नहि है ॥ ५३ ॥ वशिष्ठ कहते है ॥ कृष्ण

॥ ५४ ॥

विदुर उवाच ॥ हरिर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनं ॥ कलौ नार  
त्तेव नामैव स्तेव गारित्या ॥ ५३ ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ कृष्णेति मंगलं  
नाम यस्य वाचा घवर्त्तते ॥ भस्मीवर्त्ततु तस्याशु महापापनाशकोटयः ॥ ५४ ॥

जो नाम जिस के श्रुत हो रहता उस के महापाप को दिसै सो सुव भस्म हो जाते हैं ॥ ५४ ॥



पं जी ५  
२१

सुखती कहत है ॥ कृष्ण कौं ॥ वासुदेव जी कौं ॥ परमाजी कौं ॥ हरि जिह्वां नमस्कार है ॥  
शरणागत न के दुःख हर कर्नै वाले गोविंद जी कौं नमस्कार है ॥ ५५ ॥ कश्यप के

अरुंधत्युवाच ॥ कृष्णाय वासुदेवाय हस्ये परमात्मने ॥ प्रणवलोका  
नाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ५५ ॥ काश्यप उवाच ॥ कृष्णानुस्य  
सं देवणपसंघट्टपंजरं ॥ शतधा भेदमाप्नोति गिरिवज्रहतो यथा

हता है ॥ कृष्ण जी का शोनाम है ॥ सो कैशा है ॥ पापन का जो समूह है ॥ उस्का सब सो  
खंड फोड़ने वाला है ॥ जैसा पर्वत का फोड़ने वाला वज्र होता है तैसा ॥ ५६ ॥ राम ॥

२१

इर्जोधन कहत है ॥ धर्म कौं मैं जाणता हूं ॥ करनै कौं मन नही करता है ॥ पाप कूं जानता  
हूं ॥ पाप से मन नही हटता है ॥ कोहि देवता हृदय में विवेक को करावाता है ॥ सो मैं करा

इर्जोधन उवाच ॥ जानामि धर्म न च मे प्रवृत्ति जानामि पापं न च स  
निवृत्ति ॥ केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तो स्मितया करोमि  
॥ ५७ ॥ यंत्रस्य गुण दोषा दत्ता मधुसूदनः ॥ अहमेव महर्हत्तमः  
मदोषो न दीयते ॥ ५८ ॥

वता हूं ॥ ५७ ॥ यो यह शरीर करता है सो तुम दत्ता मा करीयो ॥ हे मधुसूदन ॥ मैं अपने को  
आप ही मारता हूं ॥ मैं को दोष मत दीजीयो ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री ६



पंजी  
२२

भृगुकहतेहै हेगोविंदः नृणां योनामहै तमसैवडाहै नृमा योनामहै कहैनेसावतारताहै  
नमते अष्टांगयोगसैतारतेहै ॥ इसीकारणनामवडाहै ॥ ५६ ॥ लोमशउवाच ॥ नारायण

भृगुरुवाच ॥ नामेवतवगोविंदनामस्ततः शताधिक ॥ दद्यात्पुत्राणां  
शुक्रिः भवान्छांगयोगात् ॥ ५७ ॥ लोमशउवाच ॥ नमामिनारायण  
पादपंकजं करोमि नारायण पादप्रसन्नं ॥ वदामि नारायण नामनिः  
र्मलं स्मरामि नारायण तत्त्वमवाय ॥ ५८ ॥

एकेचरणकमलनकोमैनमस्कारकरताहुं ॥ नारायणकेचरणनकाएजनमैकरताहुं ॥ ना  
रायणकाजोनामहैसोमैकहताहुं ॥ अवायअविनासियोनारायणहैउन्कास्मरणकरताहुं

५९

राम

२२

शौनकउवाच ॥ जिसनारायणका नामस्मरणकैनेसात्र कल्याणकापात्रहो  
जाताहै ॥ ऐसेयो नारायण अजनिता जिसकोपासकहतेहै ॥ उन्कैमैशरणहुं ॥ ६२ ॥ ग

शौनकउवाच ॥ स्मृते सकल कल्याण भाजनं यत्र जायते ॥ पुरुषस्तमः  
जं नित्यं व्रजामिशरणं हरिं ॥ ६१ ॥ गौरीवाच ॥ नारायणो गतिमंत्रो लिख्य  
स्ति ववर्तिती ॥ तथापि न केधारेण तं तीतो तदभुतं ॥ ६३ ॥

गीकहतेहै ॥ नारायणकाजोनामहै ॥ जिह्वाअपणेतारवहैतोमिमचुषानकको  
जातेहै ॥ एहवडाआचर्याहै ॥ ६२ ॥ कृष्णायनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



दाल्भ्यत्रधिकहतेहै जताईतयोता रायणउन्केविषे जिसकीभक्तिहै उसने  
वहुतमंत्रनकेजपनेसे क्याकरनाहै एकसो नारायणकामंत्रहै सोमंत्रसर्वसि

दाल्भ्यउवाच ॥ किंतस्यबहुभिर्मंत्रैभक्तिर्यस्यजनार्दने ॥ ॐ नमोना  
रायणेतिमंत्रः सर्वाण्यसायकः ॥ ६३ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ यत्रयोगैः  
स्वरंकुलोयत्रणार्थेधनुर्द्धरः ॥ तत्रश्रीविजयोमूर्तिभक्तानीतिमतिरु

द्धिवादेनेवालाहै ॥ ६३ ॥ वैशंपायनकहतेहै ॥ जहांयोगोस्वरंकुलोहै धनुर्धीरीश्रु  
नजाहोहै ॥ जहांलक्ष्मिभिहै ॥ जयभिवाहीहै ॥ राजनीतिभिवाहीहै निशुपज्ञाएना ॥ ६४ ॥ राम ॥

॥ २३ ॥

शुभिकहतेहै ॥ हरियो नारायणहै ॥ इहचित्रसेभियोस्मरणकहतोंहैं तो भिण  
पतकोहातेहै ॥ जैसाविनाइकासैयोसायाश्रितजलाईदेताहै पराशरकहतेहैं

हरिहरतिपालिदुष्टचिन्हैरपिस्मृतः ॥ अतिछयापिसंस्पष्टेदहतेवहिण  
वर्कः ॥ ६५ ॥ पराशरउवाच ॥ सकृच्चरितंयेनहरिरीतद्वरद्वयं ॥ वक्ष्ये  
रिकरस्तेनमोक्षायगमनं प्रति ॥ ६६ ॥

जो

योमनुष्ययेकवेरहरिसेदोमूलरहै ॥ इत्योंकहताहै ॥ उनकोमोक्षकेति  
सित्तिकमरवाधिहै ॥ सोमोक्षकोपावताहै ॥ एहतातनिश्रुयहै ॥ ६६ ॥



पौलस्त्य उवाच ॥ हे जिह्वा त्वमसर्वरसनकी ज्ञाणने वाली है ॥ सर्वकालमधु  
रजोवस्तु है ॥ सो ते सविज्ञा ॥ नारायण का नाम ही ॥ ये मृत है ॥ सो सब वस्तु

पौलस्त्य उवाच ॥ हे जिह्वा त्वमसर्वदासधुरप्रियो ॥ नारायणारव्यपि  
पृथग्विजिह्वेनिरंतरं ॥ ६८ ॥ वास उवाच ॥ सत्यं पुनः सत्यं भुजगुः  
त्वाय चोच्यते ॥ न देवाश्च परं सास्त्रं न देवा केशवात्परः ॥ ६९ ॥

पारकरः ॥ ६८ ॥ वाश कहते है ॥ वेद समान दोसरा शास्त्र नहि ॥ नारायण समान  
दोसरा देवता नहि ॥ ६९ ॥

राम  
२४

धन्वतरी कहते है ॥ अच्युत अनंत गोविंद रे ॥ तीन नाम है ॥ रेवती औ सध है ॥ इस औ सध के  
घाँसे सव औ सध हर हो जाते है ॥ यह बात मैं सत्य कहता हूँ ॥ ७० ॥ मार्कंडेय कहते है

धन्वतर उवाच ॥ अच्युत अनंत गोविंद नमो ह्यारणभे सजं ॥ न शं  
तिस कला रोगाः सजं ॥ ७० ॥ मार्कंडेय उवाच ॥ स  
हानिस्तान्महर्षि ॥ यजुः स्रुता ॥ यत्सुहं नृक्षणं वापि  
वासुदेव न चिंतयेत् ॥ ७१ ॥

हानि वही है ॥ द्विष्ट वही है ॥ अघे रात्र वही है ॥ मूर्धिता वही है ॥ गरिबी वही है ॥ जो क्षण मात्र  
अरका चिंतन नहि करना है ॥ ७१ ॥



॥ श्री ॥  
॥ ५ ॥

अगलिकहतेहै ॥ एकपलकभ्राधापलकसोमनुष्यविष्णुकाचिंतनकार  
है ॥ कोटिहजारयत्नकरेकाफलपावताहै ॥ ७२ ॥ मनसैकर्मसैवाणिसैयेमनुष्य

अगस्त्यउवाच ॥ निमित्तनिमित्तसिंघाईवाप्राणिनांविष्णुचिंतन ॥  
नं ॥ कनुकोटिसहस्रसाध्यानमेकंविशिष्यते ॥ ७३ ॥ मनः  
साकर्मणावाचायेस्मरंतिजनाहिनं ॥ तत्रात्रकुरुक्षेत्रप्रया

नारायणकस्मरणकहेहै ॥ ताहांतहांपुरुक्षेत्रनैमिषारणपवनहै ॥ विष्णुकास्म  
रणकरनेवालेपापनसैहूटतेहै ॥ निश्चयकरिके ॥ ७३ ॥

॥ राम ॥  
॥ २५ ॥

सवशाखनक्रंदेसविचारिकेफेरफेरवहीतागैहै ॥ नारायणका  
धानकमार्गस्वरही ॥ स्मरणकरैवालायकहे ॥ ७४ ॥ महादेवकहतेहै

अकउवाच ॥ आलोद्वसर्वशाखाणिविचार्योवंपुनःपुनइदमेकं  
समुत्पन्नंयेयोन्नायय ॥ ७४ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ अरि  
सणिनवछिन्नंवाधिहरेकलेवरं ॥ ओषधंजाडूवीतोयवैयो  
नारायणोहरि ॥ ७५ ॥

सशरिकेनोछिद्रहै ॥ रोगहंरवनकाधरहै ॥ सशरिकीओषधक्याहै ॥ ओषधगंगा  
लहै ॥ वैद्यनारायणहै ॥ गंगामेस्नानइस्नानकाचिंतनजबकरेतोतरजाताहै ॥ ७५ ॥



नककहतेहै अत्रवस्त्रकीकरवैभववर्णकरतेहैः निवृत्तपालनक  
नैवास्तयोतारायणहैः सोअपतेभक्तनरूपालेगाक्यापालेगा ॥ १६ ॥ इसत

शोकउवाच ॥ भोजन... चिंताहृथाकुर्वतिवैभवा ॥ यो ॥  
सोविप्रभरोदेवों ॥ १६ ॥ एवंब्रह्मादेवों ॥  
देवाऋषयश्चतपोधनाः ॥ कीर्तयंतिसुरेश्वरदेवनाराय ॥

रहसैब्रह्मादिदेवताहै ॥ औरतपस्याकरतैवालेऋषिभये ॥ सुरेश्वरनारा  
यप्रभुउगकीजोस्वतिहैसोकरी ॥ वहुतप्रसन्नभये ॥ १७ ॥ कृष्णायः ॥

राम  
२६

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ व्रजतवेसवयोतिमजन्मले लक्ष्मीछत्रजाहतिमृनिमृ  
तिले ॥ पहनीहारहे प्राणाददछत्रतिमृऊरसंवेवोजिगर्दछत्र ॥ १ ॥ सख

गोप्यउवाच ॥ ॥ जयतितेधिकंजन्मनात्रज श्रयतः दीशशश्वदत्रही  
॥ दयितदृस्यतांदिधुतावक सत्यधृतासवस्तामिवन्ते ॥ १ ॥ सरद  
दासयेमाधुजातसत् सरसिजोदर श्रीसुमादश ॥ सुरतनाथहेसुल्ल  
सामिकावरदनिघ्नतोनेहकिंवद ॥ २ ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥

याकमलवेसपत्रने... त्यातिघ्रोनेत्रले। सुरतनाथहेहामिदासिकीव  
... नकिंका मदेविमो ॥ २ ॥



हवराविहृभोमात्तु... जुलिअग्निभोआदिभोरिभो॥ यमकिम  
मत्तिलोकभेतिभोःरसनिरारभयोयेतिउःस्वभो॥ ३॥ तिमिरस्थानदो

हवजलाप्ययाद्यात्तराभसाहर्वमाकतदेउतातला॥ हवन  
यात्मजादिभ्रतोभयाहवभतेभयंरक्षतामुद्र॥ ३॥ यलुगोपि  
कानन्दनोदवांनविलदेहिनांमंनशात्महक॥ विद्यनसार्थितोवि  
भगुप्रये. सयउदेहिवान्माततामुकुले॥ ४॥ श्रीरामचन्द्राय॥

पुत्रगोपिकाहृदयसाछिहोसर्वदेहिनाः॥ विधिकिवितिलेत्तोकपालभयो  
जडकुलेविधेजन्मभेगयो॥ ४॥